183
696 (P)
M
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1368/10171

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 696

Sukhdev Goyal Bhargava ... 99
20/10/29
696
444

* बन्देमातरम् *

राष्ट्रीय समर

जिसमें

चुनिन्दा चुनिन्दा राष्ट्रीय गाने हैं।

एक दफा पढ़ने ही से दिल को
फड़का देने वाली कविताओं
का संग्रह

प्रकाशक व संग्रहकर्त्ता

के० एल० वर्मन

विशेश्वर गंज, बनारस सिटी।

प्रथमावृत्ति] सन् १९३० ई० मूल्य -)
सैकड़ा ४)

891.431
B927R

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 696
Date 17.12.71
GOVT. OF INDIA

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

ओ३म्

राष्ट्रीय समर

१–झण्डा ऊँचा रहे हमारा

प्रेमिक विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

सदा शक्ति बरसानेवाला, प्रेम-सुधा सरसानेवाला,
वीरों को हरषानेवाला, मातृ-भूमि का तन-मन सारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर जोश बढ़े क्षण-क्षण में,
काँपें शत्रु देखकर मन में, मिट जावे भय संकट सारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

इस झण्डेके नीचे निर्भय, ले स्वराज्य वह अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय, स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ,
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये,
विश्व मुक्त करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
प्रेमिक विश्व तिरंगा प्यारा॥

२—वन्देमातरम्

हम गरीबों के गले का हार वन्देमातरम्।
छीन सकती है नहीं सरकार वन्देमातरम्॥
सर चढ़ोंके सर में चक्कर उस समय आता ज़रूर।
कान में पहुँची जहाँ झनकार वन्देमातरम्॥
हम वही हैं जो कि होना चाहिये इस वक्त पर।
आज तो चिल्ला रहा संसार वन्देमातरम्॥
जेल में चक्की घसीटूँ भूख से हूं मर रहा।
उस समय भी कह रहा बेज़ार वन्देमातरम्॥
मौत के मुंह पर खड़ा हूँ कह रहा जल्लाद से।
भोंक दे सीने में अब तलवार वन्देमातरम्॥
डाकृरों ने नब्ज़ देखी सर हिलाकर कह दिया।
हो गया इसको तो अब आज़ार वन्देमातरम्॥

ईद, होली औ दशहरा, शुबरात से भी सौगुना।
है हमारा लाड़ला त्योहार बन्देमातरम्॥
जालिमों का जुल्म भी काफूर सा उड़ जायगा।
फैसला होगा सरे दरबार बन्देमातरम्॥

३–आरजू

जगदीश यह विनय है जब प्राण तन से निकले।
प्रिय देश देश रटते यह प्राण तन से निकले॥
भारत बसुन्धरा पर सुख शान्ति संयुता पर।
सश्याम श्यामला पर यह प्राण तन से निकले॥
देशाभिमान धरते, जातीय गान गाते।
निज देश व्याधि हरते यह प्राण तन से निकले॥
भारत का चित्र पट हो, युग नेत्र से निकट हो।
श्री जाह्नवी का तट हो तब प्राण तनसे निकले॥

४–बसन्ती चोला

ये रङ्ग बसन्ती चोला,
यह रङ्ग बड़ा अनमोला।
इसी रङ्ग में बाबा गाँधी ने,
नमक पै धावा बोला॥
इसी रङ्ग में जवाहर लाल ने,
जेहल का फाटक खोला।

इसी रङ्ग में तैयब जी ने,
घरसने पै धावा बोला ॥
इसी रङ्ग में सरोजनी देवी ने,
भूख की शिद्दत झेला ।
इसी रङ्ग में पटेल साहब ने,
असेम्बली की गद्दी छोड़ा ।
इसी रङ्ग में पेशावर वालों ने,
गोली खाने को सीना खोला ॥
इसी रङ्ग में शोलापुर वालों ने,
कांग्रेस कचहरी खोला ।
इसी रङ्ग में गायब होगया,
उनका तोप और गोला ॥

५-कट कट के मरना होगा

आओ वीरो ! मर्द बनो, अब जेल तुम्हें भरना होगा ।
सत्याग्रह के समर क्षेत्रमें आ आ के डटना होगा ॥
शूर लड़ाके मर्दाने हो, पैर हटाना कभी नहीं ।
मरते मरते माता का अब, क़र्ज अदा करना होगा ॥
वक्त नहीं है ऐ वीरो, अब ग़ाफिल होकर सोने का ।
दौड़ चलो मैदान में, माता का दुःख हरना होगा ॥
याद करो माता का तुमने, बहुत दूध है पान किया ।
दूध पिये की लाज बहादुर, किसी तरह रखना होगा ॥

शेर मर्द हो बीर आँकुड़ा, याद करो कर्तव्यों का ।
मातृ वेदि पर हँसते २ कट २ के मरना होगा ॥

९—'मर जायेंगे'

देश हित पैदा हुए हैं देश पर मर जायेंगे ।
मरते मरते देश को ज़िन्दा मगर कर जायंगे ॥
हमको पीसेगा फ़लक चक्की में अपनी कब तलक ।
ख़ाक बन कर आँख में उसकी बसर कर जायेंगे ॥
कर वही वर्गे खिजां को बादे सर सर दूर क्यों ।
पेशवाए फ़स्ले गुल हैं खुद सफर कर जायेंगे ॥
ख़ाक में हमको मिलाने का तमाशा देखना ।
तुख्म रेज़ी से नये पैदा शजर कर जायेंगे ॥
नौ नौ आँसू जो रुलाते हैं हमें उनके लिये ।
अश्क के सैलाब से बरपा हशर कर जायेंगे ॥
गर्दिशे गरदाब में डूबें तो कुछ परवा नहीं ।
बहरे हस्ती में नई पैदा लहर कर जायेंगे ॥
क्या कुचलते हैं समझ कर वह हमें बर्गे हिना ।
अपने खूं से हाथ उनके तर बतर कर जायेंगे ॥
नक़शे पा है क्या मिटाता तू हमें पीरे फ़लक ।
रहबरी का काम देंगे जो गुज़र कर जायेंगे ॥

७–देशी पहनो जी

अब देशी पहनो जी, भाइयो फैशन को छोड़ के।
है विनती करती जी, भारत माता कर जोड़ के॥

* शेर *

जो तुम पहनो खद्दर, एक पन्थ दो काज।
एक तो पैसा घर बचे, दूजे हो भारत आजाद॥
अब खद्दर पहनो जी, न बैठो मुखड़ा मोड़ के॥अब०॥

* शेर *

जो तुम समझो खद्दर चुभता न बनते छैल छबीले।
भारतवर्ष के अन्दर कपड़े बनते रङ्ग रङ्गीले॥
पर पहनो देशी जी लन्दन से नाता तोड़ के॥अब०॥

* शेर *

भारतवर्ष के बच्चे भूखों मरते रुदन मचाते।
इङ्गलैंएड के कुत्ते यारो दूध व बिसकुट खाते॥
हाय कुछ न छोडा जी, जालिम ले गये सब लूट के॥अब०॥

८-गान्धी महिमा

गांधी तू आज हिन्द का एक शान बन गया।
सारी मनुष्य जातिका अभिमान बन गया॥गांधी०॥
तू सत्य, अहिंसा, दया निस्वार्थ त्याग से।
इस आज मर्त्यलोक मे भगवान बन गया॥गांधी०॥

तेरा प्रभाव, सादगी, हस्ती को देखकर।
दुश्मन भी वेज़बान हो हैरान बन गया ॥ गांधी०॥
तेरी नसीहतों में वह जादू का असर है।
जिसको लगी हवा तेरी इन्सान बन गया ॥गांधी०॥
तू दोस्त है हर कौम का हर दिल अज़ीज़ है।
सारा जहान तेरा कदरदान बन गया ॥ गांधी० ॥
गो हिन्द आज उठ न सके बायसे तकदीर।
फिर भी स्वराज लेने का सामान बन गया ॥गांधी०॥
धिक्कार माधव है हमें तैंतीस कोटि को।
तुझसा फकीर जेल का मेहमान बन गया ॥गांधी०॥

९–रणभिक्षा

हम सब योधा मिलकर भाई रण भिक्षा को जाते हैं।
भारत माता जननि हमारी उसका कष्ट मिटाते हैं।
आपस में तुम लड़ना छोड़ो; प्रीति परस्पर करना सीखो,
यह सन्देशा लाते हैं।

१०–अरमान रह न जावे

चुन चुन के फूल लेले, अरमान रह न जावे।
ये हिन्द का बगीचा, गुलज़ार रह न जावे॥
ये वो चमन नहीं है, लेने से होवे उजड़।
उलफतका जिससे कुछ भी, अहसान रह न जावे॥चुन०

करदो ज़बानबंदी, जेलों में चाहे भर दो।
माता पे होता कोई, कुरबान रह न जावें ॥चुन०॥
छल औ फरेब से तुम, भारत का माल लूटो।
उसके गुजर का कोई, सामान रह न जावे ॥
चुन चुन के फूल लेलो, अरमान रह न जावे ॥

११-फरियादे खुदा

इलाही तुम भी ख़याल रखना,
गवाह तुमको बना रहे हैं।
हम हिन्दवालों को पाके दुर्बल,
वो हर तरह से सता रहे हैं ॥
सुना है फरियाद पर वो देखो,
ग़ज़ब कि तीवर चढ़ा रहे हैं।
तो सरकटाने कि आरजू में हम,
आज मक़तल में जा रहे हैं ॥
अजब है उत्साह सबके दिल में,
के लोग जेलों में जा रहे हैं।
जो कल थे मखमल पै सोने वाले,
वो आज कम्बल बिछा रहे हैं ॥
हम हिन्दमाता का ऋण चुकाने,
को खून अपना बहा रहे हैं।

मगर उन्हें क्या जवाब होगा,
जो तुझ पै गोली चला रहे हैं॥

हमहिन्द मांके हैं ऐसे बच्चे,
जो जान अपनी लड़ा रहे हैं।

औ एक भारत सुपूत वो हैं,
जो पेश डंडों से आ रहे हैं॥

जो मेरे महफिल के बामुक़ाबिल,
वो गनमशीनें लगा रहे हैं।

तो हम भी आहों कि ताक़तों से,
उन्हीं की हस्ती मिटा रहे हैं॥

फलक के नीचे से हट वो जायें,
अभी से उनको चेता रहे हैं।

हम अपनी आहों से इस समय,
आसमां को भी डगमगा रहे हैं॥

जो मिल के तैंतिस करोड़ भारत में,
आहों गिरियाँ मचा रहे हैं।

ये राजे महेशर के सोते फितनों को,
आज ही से जगा रहे हैं॥

शमा कि सूरत में दिल जलाकर,
बो लेके गुलगीर आ रहे हैं।

जो हिन्द के हैं चिरागे रौशन,

बिचारे सरको कटा रहे हैं ॥

वे जोश खाकर दमन का अपने,

जो चक्र अज़हद चला रहे हैं ॥

तो अहले "शायक" स्वतन्त्रता के,

खुद अपने सर को झुका रहे हैं ॥

१२–बदला है अब जमाना

भारत के शेर जागो बदला है अब जमाना ।
प्यारे वतन को इस दम आजाद है कराना ॥

मत बुजदिली को हरगिज तुम पास दो फटकने ।
आखिर तो दम अदम को होगा कभी रवाना ॥भारत०॥

परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं ।
उनको हराम हैगा भारत का अन्न खाना ॥ भारत० ॥

माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित ।
वालंटियर बनो तुम सब छोड़दो बहाना ॥भारत०॥

मन में झिझक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ ।
है स्वर्ग के बराबर फाँसी पर झूल जाना ॥भारत०॥

१३--गाना

जो वक्ते शिकवा खुदा से महेशर में रोके हम अश्कबार होंगे।
तो सुन के भारत कि दुर्दशावों को रंज परवरदिगार होंगे॥
करोगे फरियाद कैसे रोकर खुदा के हमसर बरोजे महेशर।
ये चन्द क़तरे भी आँसुवों के न मिलने वाले उधार होंगे॥
महात्माजी को कैद रखने से आन्दोलन न दब सकेगा।
अभी तो तैंतिस करोड़ गाँधी इस हिन्द में आशकार होंगे॥
हज़ारों मोती के होंगे जौहर और लाखों होंगे जमा जवाहर।
औ मरने वाले वतन पै अपने करोड़ों क्या बेशुमार होंगे॥
तुम्हारे तीरे सितमको मेहमां बनाके दिलमें जां रख रहे हैं।
ये मेरी आहों में हो के शामिल तुम्हारे सीने के पार होंगे॥
गजब में आकर न बदलो तीवर चला के खंजरभी आजमालो।
कसम खुदा की ये सच ही मानों ज़रा न हम बेकरार होंगे॥
जो कत्ल करने की है तमन्ना तो ये भी दिल में खयाल रखना।
हमारे खूं के हर एक कतरे स्वराजे उम्मीदवार होंगे॥
हमारे भारत के बच्चे बच्चे बढ़ा के उत्साह कह रहे हैं।
के हिन्दमाता के क़दमों में सर चढ़ा के हम जाँ निसार होंगे।
जो छोटे बच्चों के नर्म दिल में भी गोलियों को चुभा रहे हो।
तुम्हारे सीने में चुभने वाले हजारों बिच्छू के आर होंगे
बने हैं जांबाज हम भी "शायक" बवक्ते जिबहा भी देख लेना॥
के जेरे खञ्जर भी जानशीनों के सर ये बीसों हज़ार होंगे॥

१४--सरफरोशी की तमन्ना

सर फरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है॥
रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज्जते सहराना वरदी दूरिये मन्जिल में है॥ सर०॥
वक्त आने दे बतायेंगे तुझे ऐ आसमाँ।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है॥सर०॥
आज मकतल में ये कातिल कह रहा था बारबार।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है॥सर०॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत में तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी महफिल की चरचा गैरकी महफिल मेंहै॥ सर०॥

फिर क्या चाहते हैं

बतायें तुम्हें हम कि क्या चाहते हैं।
गुलामी से होना रिहा चाहते हैं॥
फ़कत इस ख़ता के सज़ावार हैं हम।
की दर्दे वतन की दवा चाहते हैं॥
बुरा चाहते हैं जो हम बेकसों का।
हम उनका भी दिलसे भला चाहते हैं॥

ग़रीबों को तेरा ही बस आसरा है।
निगाहें करम या खुदा चाहते हैं॥
इस उजड़े हुए गुलशने हिन्द को फिर।
हरा और फूला फला चाहते हैं॥
घड़ा पाप का ग़ालिबन भर चुका है।
जमाने से ज़ालिम मिटा चाहते हैं॥
वतन पर दिलोजान कुरबान करके।
जो मर कर भी आवे वफा चाहते हैं॥

समाप्त

मथुराप्रसाद गुप्त द्वारा
श्रीयन्त्रालय, सत्तीचौतरा, बनारस में मुद्रित।

देश की मर्यादा ! देश की स्वाधीनता !!

सूत कातने की तकली

आप लोगों को विदित हो कि हमारे कारखाने में हर किस्म की सूत कातने की तकली काठ की तथा पीतल की ≡) आने दर्जन से लेकर दो रुपये दर्जन तक की तकली बनती है, इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय नेताओं के बैज और देशी निशान, खद्दर के तिरंगे फूल हर वक्त तैयार मिलते हैं। जिन महाशयों को जरूरत हो नीचे लिखे पते पर पत्र व्यवहार करें या स्वयं आकर देखें।

पता—

भारत तकली कार्यालय,

दीनानाथ का गोला, बनारस सिटी।

प्रोप्राइटर—रामचन्द्र बेनीराम अग्रवाल